04. आवृत्ति वाचक वाक्य – जहाँ मुख्य कथन से पूर्व कई कुतूहलजनक उपवाक्यों की आवृत्ति होती है और अन्त में अभीष्ट कथन को पूरी ताकत के साथ गोली की तरह दाग दिया जाता है, उसे आवृत्यात्मक वाक्य कहते हैं। जैसे–'यदि आप धर्म निरपेक्ष व्यवहार चाहते हैं, यदि आप भ्रष्टाचार मुक्त कारभार चाहते हैं, यदि आप एक स्थायी सरकार चाहते हैं, तो अपना बहुमूल्य मत अमुकदल को दीजिए।'

05. श्रृंखलित वाक्य – ग्रामीण लोग संभाषण के समय प्रायः संक्षिप्त वाक्यों का प्रयोग करते हैं। उनके पहले वाक्य का अंतिम अंश (विधेय) अगले वाक्य का 'उद्देश्य' बन जाता है और वाक्यों की एक श्रृंखला–सी बनती जाती है। इन वाक्यों को 'श्रृंखलित वाक्य' कहते हैं, जैसे 'एक राजा शिकार खेलने गया। शिकार खेलने गया तो रास्ता भटक गया। रास्ता भटक कर एक कुटिया पर जा पहुँचा।'

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वाक्य से कोई न कोई भाव (अर्थ) अवश्य प्रकट होता है। वाक्य रचना शब्दों या पदबंधों के योग से होती है। वाक्य रचना उद्देश्य तथा विधेय के योग से होती है। वाक्य के शब्दों के बीच एक निश्चित क्रम होता है। वाक्य संक्षिप्त या कई शब्दों का हो सकता है। वाक्य व्याकरणिक दृष्टि से पूर्ण होता है एवं अर्थ की दृष्टि से पूर्ण या अपूर्ण होता है। साथ ही वाक्यों के भेद किया, भाव (अर्थ), रचना, आकृति एवं शैली के आधार पर किये जाते हैं।

संदर्भ ग्रंथः–

01. भाषा–विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
02. भाषा – विज्ञान एवं हिन्दी भाषा – डॉ. पंडित बन्ने
03. भाषा विज्ञान – डॉ. राजेश श्रीवास्तव (शम्बर)
04. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र – डॉ. कपिल देव द्विवेदी
05. सामान्य भाषा विज्ञान – डॉ. बाबू राम सक्सेना
06. भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा

♦●♦

"छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रयोग में आपसी प्रेम व भाईचारा झलकता है, अपनों के बीच इसका बहुतायत से प्रयोग हो।"

–डॉ रमेश टण्डन फूलबंधिया

PRINCIPAL, GOVT. ENGINEER VISHWESARRAIYA P.G. COLLEGE, KORBA (C. G.)

15.

वाक्य विश्लेषण, निकटस्थ अवयव विश्लेषण; गहन संरचना, बाह्य संरचना

– डॉ0 दिनेश श्रीवास*

सेमेस्टर – I प्रश्नपत्र– IV (भाषा विज्ञान), इकाई – 03 (व्याकरण)
रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद– मुक्त, आवध्य, अर्थदर्शी, संबंधदर्शी; रूपिम के प्रकार्य, वाक्य की अवधारणा, वाक्य के भेद, वाक्य विश्लेषण, निकटस्थ अवयव विश्लेषण, गहन संरचना, बाह्य संरचना,

शब्दों का वह समायोजन जो अपने भाव को पूर्णतः स्पष्ट करे उसे वाक्य कहा जा सकता है। वाक्यों का निर्माण कई प्रकार से हो सकता है। वाक्य के कई प्रकार भी होते हैं। इसमें एक आधार रचना भी होती है, अर्थात् रचना के आधार पर भी वाक्यों का निर्माण हो सकता है। इन्हीं रचना के आधार पर बने वाक्यों के घटकों को अलग–अलग कर उनका आपस में संबंध बताना वाक्य विश्लेषण कहलाता है।

*जन्म : 10/12/1977, बिलासपुर (छ.ग.), माता : श्रीमती आशा देवी, पिता : श्री गणेश श्रीवास, शिक्षा : बी.एस–सी. (गणित), एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल. (हिन्दी), पी–एच.डी. – "मोहन राकेश के नाटक और व्यक्ति स्वातंत्र्यः एक विश्लेषण" शीर्षक पर, रूचि : कविता, कहानी, नाटक तथा शोध–पत्र लेखन में विशेष रूचि, कई काव्य संग्रह व कहानी संग्रह प्रकाशनाधीन, कार्य : 1.कई राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में शोध पत्र का प्रकाशन, 2. दस से अधिक राष्ट्रीय सेमीनारों में शोध पत्र की प्रस्तुति, 3. सह–संयोजक के रुप राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन, 4. पॉवर ग्रिड कॉर्पोरेशन कोरबा मुख्यालय में अनेक बार "हिन्दी पखवाड़ा" में मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि, 5. जनगणना, मतदान आदि राष्ट्रीय महत्व के कार्यों में राज्य स्तर के प्रशिक्षक के रुप में कार्य, अन्य : आपके माता–पिता कम शिक्षित होने के बावजूद आपके लिए जीवन–अनुशासन के श्रेष्ठ शिक्षक बने, सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शा. इंजी. विश्वेश्वरैया महाविद्यालय कोरबा, छ.ग., आवास : ए–71, रामाग्रीन सिटी, बिलासपुर (छ.ग.), मोबा. नं:– 7770899636, 7974698680, Email ID: dineshsriwash77@gmail.com

GOVT. E.V.P.G. COLLEGE ★ KORBA ★